aglasem.com

FOR HARYANA CLASS 12 PREPARATION

# HBSE Class 12 Sample Paper 2027 Hindustani Music Vocal with Marking Scheme

| EXAM | YEAR | TYPE | SUBJECT |
| --- | --- | --- | --- |
| Haryana Class 12 | 2027 | Sample Paper | Music |

# Marking Scheme

## BSEH Model Paper ( 2026-2027)

**CLASS: 12th ( Sr. Secondary)** **Code: A**

Roll No. | | | | | | | | | |

हिंदुस्तानी संगीत गायन

**( Hindustani Music Vocal)**

(Hindi and English Medium)

**ACADEMIC / OPEN**

(Time allowed: 2½ hours) (Maximum Marks: 30)

---

**खंड (1) वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न 1 से 8**

**Section (1)** Objective type questions

**(01 X 08 = 08)**

---

**प्रश्न 1.** ध्रुपद गायन शैली का सबसे प्राचीन रूप माना जाता है—

(A) ठुमरी B) ध्रुपद C) टप्पा D) ग़ज़ल

**उत्तर 01.** (B) ध्रुपद

**प्रश्न 2** राग देश का वादी स्वर है—

(A) रे B) म C) प D) ध

**उत्तर 02** (A) रे

**प्रश्न 3** झपताल में _____ मात्राएँ होती हैं।

**उत्तर 03** झपताल में **10** मात्राएँ होती हैं।

**प्रश्न 4** ग्राम के _____ प्रकार माने गए हैं।

**उत्तर 04** ग्राम के **3** प्रकार षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम और गांधार ग्राम माने गए हैं।

**प्रश्न 5..** Assertion (A): गमक गायन की शोभा बढ़ाता है।

Reason (R): गमक स्वर की विशेष गति है।

**उत्तर 05** (A) दोनों सत्य तथा R, A की सही व्याख्या है।

**प्रश्न 6.** Assertion (A): भूपाली में सभी स्वर शुद्ध होते हैं।

Reason (R): इसमें मध्यम और निषाद वर्जित हैं।

उत्तर 06 (A) दोनों सत्य तथा R सही व्याख्या है।

प्रश्न 7 भारतीय स्वरलिपि पद्धति के प्रमुख प्रवर्तक कौन हैं?

उत्तर 07 भारतीय संगीत में आधुनिक स्वरलिपि पद्धति Notation System) के प्रमुख प्रवर्तक **पं० विष्णु नारायण भातखंडे** और **पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर** हैं उन्होंने संगीत को लिखित रूप देने के लिए क्रमबद्ध पद्धतियाँ विकसित कीं

प्रश्न 8 "स्वर कोकिला किसे कहा जाता है?

उत्तर 08 **भारत रत्न लता मंगेशकर** को स्वर कोकिला कहा जाता है।

---

## खंड (2) अति लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

## **Section (2)** Very short answer type questions

---

प्रश्न 9. वर्ण की परिभाषा लिखिए। **अथवा** मींड क्या है?

उत्तर 09 **वर्ण**

- **परिभाषा** राग में स्वरों के गायन या वादन करने की क्रिया या पद्धति को 'वर्ण' कहा जाता है॰
- **प्रकार** वर्ण चार प्रकार के होते हैं

1. स्थायी वर्ण एक ही स्वर की बार बार आवृत्ति
2. आरोही वर्ण स्वरों का चढ़ता क्रम
3. अवरोही वर्ण स्वरों का उतरता क्रम
4. संचारी वर्ण स्थायी, आरोही और अवरोही तीनों का मिश्रित रूप

*अथवा*

**मींड Meend)**

एक स्वर से दूसरे स्वर तक बिना ध्वनि को खंडित किए अटूट रूप से सहज गति से जाने की क्रिया को 'मींड' कहते हैं इसमें बीच के स्वरों का स्पर्श करते हुए जाया जाता है लेकिन उन्हें अलग अलग उच्चारित नहीं किया जाता

प्रश्न 10. ध्रुपद की दो विशेषताएँ लिखिए। **अथवा** तराना की परिभाषा दीजिए।

उत्तर 10 **ध्रुपद की दो विशेषताएँ**

1. **गंभीरता और लयकारी** ध्रुपद गायकी अत्यंत गंभीर प्रकृति की होती है और इसमें 'लयकारी' (ताल का गणितीय प्रयोग को विशेष स्थान प्राप्त है।
2. **चार भाग** ध्रुपद रचना के चार मुख्य खंड होते हैं स्थायी, अंतरा, संचारी और अभोग। इसमें मुख्य रूप से 'पखावज' और 'तंबूरा' की संगत होती है।

*अथवा*

**तराना Tarana)**

यह हिंदुस्तानी संगीत की एक द्रुत तेज लय वाली गायन शैली है, जिसकी उत्पत्ति का श्रेय अमीर खुसरो को जाता है। इसमें शब्दों के अर्थ के स्थान पर कुछ विशेष अर्थहीन अक्षरों जैसे ता, ना, दिर, तोम, तदीम आदि का प्रयोग कर आकर्षक और द्रुत लयबद्धता प्रस्तुत की जाती है

प्रश्न 11 थाट और राग में दो अंतर लिखिए। **अथवा** वाग्गेयकार किसे कहते हैं?

उत्तर 11 **थाट और राग में दो अंतर**

1. **गाय बजा** थाट का केवल क्रमानुसार सा से नि तक विस्तार होता है और इसे गाया बजाया नहीं जाता, जबकि राग की रचना सुर ताल में होती है और इसे निश्चित रूप से गाया बजाया जाता है **स्वरों का नियम** थाट में केवल 7 मूल स्वर होते हैं और इसमें आरोह अवरोह नहीं होता। राग में कम से कम 5 स्वर होने आवश्यक हैं और इसमें आरोह अवरोह और वादी संवादी की व्यवस्था होती है।

*अथवा*

**वाग्गेयकार**

वह व्यक्ति जो गीत साहित्यिक पद और संगीत स्वर रचना दोनों की रचना में समान रूप से निपुण हो, वाग्गेयकार कहलाता है। अर्थात्, जो शब्दों को भी लिख सके और उन्हें अपने सुरों में पिरोकर एक सुंदर धुन या बंदिश भी तैयार कर सके

प्रश्न 12. पंडित ओंकारनाथ ठाकुर का संक्षिप्त परिचय दीजिए। **अथवा** पंडित जसराज का परिचय लिखिए।

उत्तर 12 **पंडित ओंकारनाथ ठाकुर का परिचय**

पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ग्वालियर घराने के एक शीर्षस्थ हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक और संगीत विद्वान थे वे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय BHU) के संगीत संकाय के प्रथम डीन बने। उनकी आवाज़ में अद्भुत शक्ति थी; विशेषकर 'वंदे मातरम्' के राष्ट्रभक्तिपूर्ण गायन और मीरा भजनों के लिए वे अमर हैं।

*अथवा*

**पंडित जसराज का परिचय**

हरियाणा के हिसार जिले में जन्मे पंडित जसराज भारतीय शास्त्रीय संगीत के मूर्धन्य गायक और 'मेवाती घराने' के प्रमुख संवाहक थे। उनका संगीतमय सफर 75 वर्षों तक चला और उन्होंने अपनी गायकी में अध्यात्म तथा भक्ति का अनूठा रस घोला उन्हें पद्म विभूषण जैसे सर्वोच्च सम्मानों से नवाजा गया था

---

## खंड (3) लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

## **Section (3)** short answer type questions

---

**प्रश्न 13.** राग भूपाली का शास्त्रीय परिचय लिखिए। **अथवा** राग देश का परिचय लिखिए।

**उत्तर 13** राग भूपाली हिंदुस्तानी संगीत का अत्यंत लोकप्रिय और मधुर राग है। इसका विवरण निम्नलिखित है

- **थाट** कल्याण थाट।
- **जाति** औडव औडव आरोह और अवरोह दोनों में ५ ५ स्वर लगते हैं ।
- **वर्जित स्वर** मध्यम म और निषाद नि ।
- **वादी स्वर** गंधार ग ।
- **संवादी स्वर** धैवत ध ।
- **गायन समय** रात्रि का प्रथम प्रहर।
- **आरोह** सा, रे, ग, प, ध, सां।
- **अवरोह** सां, ध, प, ग, रे, सा।
- **पकड़** ग, रे, सा, ध, सा, रे, ग, प, ग, ध, प, ग, रे, सा।

**प्रश्न 14** समय सिद्धांत का वर्णन कीजिए। **अथवा** पूर्व राग एवं उत्तर राग का अंतर लिखिए।

**उत्तर 14 पूर्व राग एवं उत्तर राग का अंतर**

संगीत में सप्तक को दो भागों में बांटा गया है सा से म पूर्वांग और प से सां उत्तरांग । इसके आधार पर दोनों में मुख्य अंतर यह है

| गुण लक्षण | पूर्व राग Poorvanga / Poorva Raga) | उत्तर राग Uttarang / Uttar Raga) |
|---|---|---|
| **गायन समय** | ये राग **दिन के 12 बजे से रात के 12 बजे तक** गाए जाते हैं। | ये राग **रात के 12 बजे से दिन के 12 बजे तक** गाए जाते हैं। |
| **वादी स्वर की स्थिति** | इन रागों का वादी स्वर सप्तक के पहले भाग अर्थात् **सा, रे, ग, म** में से होता है। | इन रागों का वादी स्वर सप्तक के दूसरे भाग अर्थात् **प, ध, नि** में से होता है। |
| **क्षेत्र प्रभाव** | इन रागों का विस्तार मुख्यतः मंद्र और मध्य | इन रागों का विस्तार मध्य और तार सप्तक |

| | | |
|---|---|---|
| | सप्तक में अधिक होता है। | में अधिक होता है। |
| **उदाहरण** | राग भूपाली, राग यमन। | राग बिलावल, राग बिहाग। |

**प्रश्न 15** झपताल का ठेका तथा दुगुन लिखिए। **अथवा** एकताल का ठेका लिखिए।

**उत्तर 15 झपताल का ठेका तथा दुगुन**

झपताल संगत की एक प्रसिद्ध ताल है, जिसमें **१० मात्राएं**, **४ विभाग** और **तालीस ताली खाली** का क्रम होता है।

**1. झपताल का ठेका**

- **मात्राएँ** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10
- **बोल** धी ना | धी धी ना | ती ना | धी धी ना
- **ताली खाली** 1, 3, 8 मात्रा पर ताली और 6 मात्रा पर खाली है।
-

**2. झपताल की दुगुन**

दुगुन का अर्थ है एक मात्रा में दो बोल बोलना।

- **मात्राएँ** 1, 2, 3, 4, 5
- **बोल** (धी ना धी धी ना | (ती ना धी धी ना

---

**खंड (4) दीर्घ उत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न**

**Section (4)** Long answer type questions

---

**प्रश्न 16.** मध्यकाल से आधुनिक काल तक भारतीय संगीत के इतिहास का वर्णन कीजिए तथा संगीत पारिजात का महत्व बताइए।

**अथवा**

राग बिहाग का सम्पूर्ण शास्त्रीय परिचय लिखिए—

आरोह, अवरोह, पकड़, वादी, संवादी, जाति, गायन समय, दो आलाप, दो तान

**उत्तर 16 भाग 1: मध्यकाल से आधुनिक काल तक भारतीय संगीत का इतिहास एवं संगीत पारिजात का महत्व**

भारतीय संगीत का मध्यकाल लगभग १२वीं से १७वीं शताब्दी संगीत के विकास का एक स्वर्ण युग था, जिसमें फारसी अरबी प्रभावों ने इसे हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के रूप में विभाजित किया। आधुनिक काल १८वीं शताब्दी से अब तक में संगीत राजदरबारों से निकलकर आम जनता तक पहुँचा, जहाँ 'ख्याल' गायकी को अत्यधिक लोकप्रियता मिली और नई तकनीकों का समावेश हुआ।

**संगीत पारिजात का महत्व**

'संगीत पारिजात' की रचना १६५० ई० में पंडित अहोबल द्वारा की गई। भारतीय संगीत के इतिहास में इस ग्रंथ का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है
Wikipedia +1

- **वीणा के तार पर स्वरों की स्थापना** पंडित अहोबल पहले ऐसे संगीतकार थे, जिन्होंने श्रुतियों की काल्पनिक माप के स्थान पर वीणा के तार की निश्चित लंबाई मापकर शुद्ध और विकृत स्वरों की वैज्ञानिक स्थापना की।
- **स्वरों का स्पष्टीकरण** इस ग्रंथ में १२ स्वरों का विस्तृत विवरण दिया गया है, जो आधुनिक संगीत पद्धति से बहुत मेल खाता है।
- **संगीत के अंग** इसमें कुल ५०० श्लोक हैं और आठ अध्याय जैसे स्वर, ग्राम, मूर्छना, जाति, राग आदि शामिल हैं, जो प्राचीन और आधुनिक संगीत को जोड़ने वाली एक कड़ी है।

## राग बिहाग का संपूर्ण शास्त्रीय परिचय

राग बिहाग अत्यंत मधुर, गंभीर और रोमांटिक प्रकृति का राग है। यह श्रृंगार रस प्रधान राग है जो रात्रि के समय गाया जाता है।

**राग बिहाग का शास्त्रीय परिचय निम्न है**

- **थाट** बिलावल
- **जाति** औडव सम्पूर्ण आरोह में ५ स्वर और अवरोह में ७ स्वर प्रयोग होते हैं
- **वादी स्वर** गंधार ग
- **संवादी स्वर** निषाद नि
- **गायन समय** रात्रि का दूसरा प्रहर रात ९ बजे से १२ बजे तक
- **वर्जित स्वर** आरोह में ऋषभ रे और धैवत ध वर्जित होते हैं

**आरोह, अवरोह और पकड़**

- **आरोह** नी़ सा ग म प, नि सां
- **अवरोह** सां नि ध प, म प ग म ग, रे सा
- **पकड़** नी़ सा ग म प, म प ग म ग, रे सा

**दो आलाप**

1. नी़ सा ग म प — प म प ग — ग म ग रे सा
2. नी़ सा ग म प नि सां — सां नि ध प — म प ग म ग रे सा

**दो तान**

1. सा ग म प नि सां, सां नि ध प, म प ग म ग रे सा, नी़ सा ग म प नि सां
2. ग म प नि सां नि सां, सां नि ध प म प ग म ग रे सा, ध नि सां नि ध प म प ग म ग रे सा